अध्याय-10

विभूतियोग-नामक 10वाँ अ0।।

[1-7 भगवान की विभूति और योगशक्ति का कथन तथा उनके जानने का फल]

श्रीभगवानुवाचः-भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः। यत् ते अहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया।। 10/1

महाबाहो भूय एव परमं मे	हे {सहयोगियों रूपी} दीर्घबाहु! पुनः {धर्मपिताओं वा ऋषि मुनियों से} भी सर्वोत्तम मेरी
वचः शृणु यदहं प्रीयमाणाय	वाणी सुनो। जिसे मैं {सुनने-समझने और समझाने में ज्ञानियों में भी सर्वोत्तम} प्रीतिमान हुए
ते हितकाम्यया वक्ष्यामि	तेरी हित-कामना से कहूँगा। {क्योंकि सारे ही सृष्टिवृक्ष की भलाई तेरे बीजरूप से है।}

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहं आदिः हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।। 10/2

मे प्रभवं न सुरगणाः	मेरे {दिव्य प्रवेश योग्य} प्रकृष्ट जन्म को (गीता11-54 के अनुसार) न देवगण {और}
न महर्षयः विदु हि देवानां च	न {द्वापरयुगी मुनियों या} महर्षियों ने जाना है; क्योंकि देवताओं, {देवर्षियों, ब्रह्मऋषियों}, और
महर्षीणां सर्वशः आदिः अहं	महर्षियों का सब प्रकार से {महादेव द्वारा} आदि {कालीन आदीश्वर} मैं हूँ।

यो मां अजं अनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरं। असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।। 10/3

यः मां अजं अनादिं च	जो मुझ {शिवबाबा} को अजन्मा, {अगर्भा,} अनादि और {सुख, दुःख व शांतिधाम-}
लोकमहेश्वरं वेत्ति स मर्त्येषु	त्रिलोकी का महान शासक {सर्वशक्तिमान अव्यक्तमूर्ति रूप} जानता है, वह मनुष्यों में
असम्मूढः सर्वपापैः प्रमुच्यते	{सम्पूर्ण} मोहरहित हुआ, सब पापों से भली-भाँति {आधाकल्प सम्पूर्ण दुखों से} मुक्त हो जाता है।

बुद्धिः ज्ञानं असम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः। सुखं दुःखं भवः अभावः भयं च अभयं एव च।। 10/4

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा	{बुद्धिरूपा} निर्णयशक्ति, सारा सृष्टिज्ञान, {मेरे सिवा और सभी में} निर्मोही, क्षमाभाव,
सत्यं दमः शमः सुखं दुःखं	सत्य, {इन्द्रिय-} दमन, शान्ति, {नई-पुरानी दुनियाँ की शूटिंग के भी} सुख-दुःख,
भवोऽभावो भयं चाभयमेव च	{और भी अनेक सांसारिक} उत्पत्ति, अभाव, {कोई से भी} भय और अभय भी तथा

अहिंसा समता तुष्टिः तपः दानं यशः अयशः। भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः।। 10/5

अहिंसा समता तुष्टिः	{म.व.कर्म से} किसी को दुःखी न करना, समान भाव, {अनायास जो मिले उसी में} संतोष,
तपः दानं यशः अयशः भूतानां	{आत्मस्टार की स्मृतिरूप} तपस्या, दान, यश, अपयश {आदि}, प्राणियों के
पृथग्विधाः भावा मत्त एव भवन्ति	अनेक प्रकार के {अच्छे-बुरे} भाव {मूलतः} मेरे {सृष्टि-बीज महादेव} से ही होते हैं।

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवः तथा। मद्भावा मानसा जाता येषां लोके इमाः प्रजाः।। 10/6

पूर्वे चत्वारः मनवस्तथा सप्त महर्षयः	पूर्वकालीन चार मानस पुत्र {सनकादिक बीज} तथा सात महर्षिगण-{ये सब}
मद्भावा मानसा जाता येषां	मेरे आत्मभाव हैं, ब्रह्मा की मानसी पैदाइश हैं। जिनकी {स्वर्ग और नरक के}
लोके इमाः प्रजाः	संसार में यह {दिवता-स्लाम-बुद्धादि सारे मठ-पंथ सहित धर्म इन 11 रुद्रगणों की वैराइटी} प्रजा है।

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः। सः अविकम्पेन योगेन युज्यते न अत्र संशयः।। 10/7

यः ममेतां विभूतिं च योगं	जो मेरी इस {विशेष रचना} विभूतियों को तथा {महादेव रूप मेरी} योगऊर्जा को
तत्त्वतः वेत्ति सः अविकम्पेन योगेन	{सभी 23} तत्त्वपूर्वक {गहराई से} जानता है, वह अविचलित रूप से योग-ऊर्जा द्वारा
युज्यते अत्र संशयः न	{अणुरूप रूहों के बाप सदा शिवज्योति से नं. वार शंकर की तरह} •जुड़ जाता है। इस {बात} में संशय नहीं है।

{•सारे संसार में ऐसे तो एकमात्र शंकर महादेव का नाम ही शिव से जोड़ा जाता है, और किसी देव, दानव, मानव या फरिश्ता का नहीं जोड़ा जाता; इसीलिए भारत में बाप के साथ बच्चों का नाम जोड़ने की सामाजिक परंपरा आज भी चालू है। सारी अच्छी विश्वकल्याणी परम्पराएँ सुप्रीम सोल से ही आती हैं।}

[8-11 फल और प्रभावसहित भक्तियोग का कथन]

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।। 10/8

अहं सर्वस्य प्रभवः मत्तः	मैं {शिव+बाबा} सारे {साकार जगत} का आदि उत्पादक हूँ। मेरे {ही पवित्रभावों} से {अच्छा-बुरा}
सर्वं प्रवर्तते इति मत्वा	सारा {सृष्टिगत कार्य} चलता है। ऐसा {पु.संगमयुग के ब्राह्मण-जीवन में सदा जान&} मानकर
भावसमन्विताः बुधां मां भजन्ते	{हृदय से} भावविभोर हुए बुद्धिमान• लोग मुझको {पु. संगम में निरंतर} याद करते हैं।

•{अन्यथा बुद्धू लोग तो नीची कुरी के अन्यान्य देव-देवियों, धर्मपिताओं, फरिश्तों या भूत-प्रेतों आदि को ही याद करते हैं।}

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परं। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च।। 10/9

मच्चित्ता नित्यं मद्गतप्राणा	मेरे में मन-बुद्धि लगाने वाले, सदा मेरे {नाम-रूपादि} में ही जिनके प्राण लगे हुए हैं, {वे}
परस्परं बोधयन्तः च मां च	परस्पर एक-दूसरे को समझाते हुए और मेरे {क्रियाकलापों/जीवन-कथा के} विषय में ही
कथयन्तः तुष्यन्ति च रमन्ति	वार्तालाप करते हुए, सन्तोष पाते हैं और {सदा अतीन्द्रिय सुख में} रमण करते हैं।

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकं। ददामि बुद्धियोगं तं येन मां उपयान्ति ते।। 10/10

प्रीतिपूर्वकं भजतां तेषां सततयुक्तानां तं	प्रीतिपूर्वक याद वाले उन निरन्तर योगियों को वह {एकाग्र & अव्यभिचारी}
बुद्धियोगं ददामि येन ते मां उपयान्ति	बुद्धि योग देता हूँ, जिससे वे {यहीं} मेरे {प्रतिरूप} को पहुँच जाते हैं।

तेषां एव अनुकम्पार्थं अहं अज्ञानजं तमः। नाशयामि आत्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता।। 10/11

तेषां अनुकम्पार्थमेवाहं	उन पर {सृष्टिगत दीर्घकालीन} दया करने के लिए ही मैं {आत्माओं का बाप सदाशिव ज्योति}
आत्मभावस्थः भास्वता	{पुरुषोत्तम संगमयुग में सदाकाल} आत्मस्टार भाव से स्थित {उस} चमकते हुए {ध्रुवतारा मानिंद}
ज्ञानदीपेन अज्ञानजं	{त्रिनेत्री बने} ज्ञान-दीपक द्वारा, {मैं शिव ही माया-रावण की} अज्ञानता• से {द्वापुर-कलि में} उत्पन्न
तमः नाशयामि	अज्ञानान्धकार को {संगमी ब्राह्मणों में} नष्ट कर देता हूँ। {तभी कहा 'ऋते •ज्ञानान्न मुक्तिः'}

•{बुद्धिमानों की बुद्धि सदाशिव ज्योति ही मूर्तिमान (शंकर) जगत्पिता को सबसे पहले अनवरत ज्ञान-मार्ग में ले आता है। द्वैतवादी द्वापर से, 2.5 हज़ार साल में विधर्मियों के अज्ञान से ही भारतीयों की अंधश्रद्धायुक्त भक्तिमार्ग में दुर्गति हुई है। इस दुर्गति से सर्वप्रथम साकार सृष्टि के बीज/जगत्पिता बाप को ही निकालता है}

[12-18 अर्जुन द्वारा भगवान की स्तुति तथा विभूति और योगशक्ति को कहने के लिए प्रार्थना]

अर्जुन उवाचः-परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्। पुरुषं शाश्वतं दिव्यं आदिदेवं अजं विभुं।। 10/12

भवान् परं ब्रह्म परं धाम परमं पवित्रं	आप {शिवबाबा ही} परंब्रह्म हैं, श्रेष्ठतम धाम/परमधाम हैं, परमपवित्र हैं,
शाश्वतं दिव्यं पुरुषं विभुं	{कभी लोप न होने वाले} शाश्वत दिव्य पुरुष हैं {और बहुरूपिया के} विशेष रूपों में व्यक्त होते हैं।
अजं आदिदेवं	{आप त्रिकालज्ञ के दिव्य प्रवेश के कारण, मुझ अर्जुन में} अगर्भजन्मा {होने से} आदि {अनादि} देव हैं।

आहुः त्वां ऋषयः सर्वे देवर्षिः नारदः तथा। असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे।। 10/13

त्वां सर्वे ऋषयः देवर्षिः नारदः	आप शिवबाबा के विषय में {ऐसा} सब ऋषियों {त्रिलोक-भ्रमणशील} देवर्षि नारद ने,
असितः देवलः तथा व्यासः आहुः	असित ने, देवल ने और {जगप्रसिद्ध कपिलमुनि=वेद-} व्यास ने कहा है
च स्वयं एव मे ब्रवीषि	और आप स्वयं ही मुझे बताते हैं {कि आप समूचे संसार की सर्वोपरि सत्ता हैं।}

सर्वं एतत् ऋतं मन्ये यत् मां वदसि केशव। न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुः देवाः न दानवाः।। 10/14

केशव यन्मां वदसि एतत्सर्वं ऋतं	हे ब्रह्मा {और विष्णु} के शासक {शिवबाबा}! जो मुझे कहते हो, यह सब {कुछ} सत्य
मन्ये हि भगवन् ते	मानता हूँ; क्योंकि हे भगवन्! आपके {हर चतुर्युगी के आदि में हीरोपार्टधारी बने}
व्यक्तिं न देवाः न दानवाः विदुः	व्यक्त {और अव्यक्तमूर्ति महादेव} भाव को न देवताएँ और न दानव जानते हैं।

स्वयं एव आत्मना आत्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते।। 10/15

पुरुषोत्तम भूतभावन	रूहों में सर्वोत्तम {शिवबाबा!} हे भूतों के {सूक्ष्म शरीरी पार्ट के} जन्मदाता
भूतेश देवदेव जगत्पते त्वं स्वयं	भूतेश्वर! हे देवाधिदेव जगत्-पति! आप •स्वयं {प्रवेशनीय •अजन्मा-अगर्भा होने कारण}
एव आत्मना आत्मानं वेत्थ	ही अपने {मुकर्रर अर्जुन सो आदम-रथ} द्वारा अपनी आत्मा के स्वरूप को जानते हो।

•{वह सद्गुरु स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं। (मु.ता.8.10.68 पृ.2 मध्य) बाप के सिवा बाप का परिचय कोई दे न सके।} •क्योंकि बाकी सभी देव-दानव-ऋषिमुनि जन्म-मरण चक्र में आने से पूर्वजन्मों को भूल जाते हैं। तुलसीदास ने भी रामायण में यही कहा है- 'सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ हुइ जाई।।' (अयोध्या कांड) {आदम&खुदा ←इन दोनों बेहद के बापों की बात है।}

वक्तुं अर्हसि अशेषेण दिव्या हि आत्मविभूतयः। याभिः विभूतिभिः लोकान् इमान् त्वं व्याप्य तिष्ठसि।। 10/16

याभिः विभूतिभिः इमान्	{गीता 10-6 में पूर्ववर्णित} जिन {रूद्र सहित 11} विभूतियों द्वारा इन {स्वर्ग-नरकादि}
लोकान् व्याप्य त्वं तिष्ठसि हि अशेषेण	{तीनों} लोकों को फैलाकर आप {अव्यक्त होकर शांतिधाम में} बैठ जाते हो क्योंकि {वे} सारी
दिव्या आत्मविभूतयः वक्तुं अर्हसि	{श्रेष्ठ} दैवी जीवात्मरूप विभूतियाँ बताने में {आप त्रिकालज्ञ आदीश्वर ही} समर्थ हो।

कथं विद्यां अहं योगिन् त्वां सदा परिचिन्तयन्। केषु केषु च भावेषु चिन्त्यः असि भगवन् मया।। 10/17

योगिन् अहं कथं सदा परिचिन्तयन्	हे योगीश्वर! {आपके सहयोग बिना} मैं कैसे निरंतर विचार-मंथन करता हुआ

त्वां विद्यां च भगवन् केषु-2	आप {अचिन्त्य-अदृश्य रूप} को {पूरी रीति} जान सकता हूँ और हे भगवन्! किन-2 {श्रेष्ठ}
भावेषु मया चिन्त्यः असि	भावों में मेरे {जैसे डल/पत्थर बुद्धि} द्वारा {आप निरंतर} चिन्तन करने योग्य हो?

विस्तरेण आत्मनः योगं विभूतिं च जनार्दन। भूयः कथय तृप्तिः हि शृण्वतो न अस्ति मे अमृतं।। 10/18

जनार्दन आत्मनः योगं च	हे अवढरदानी शिवबाबा! अपनी {इस} योग-{ऊर्जा की} शक्ति और {अपनी इस}
विभूतिं भूयः विस्तरेण कथय हि मे	•विभूति को दुबारा विस्तार से कहिए; क्योंकि मुझे {इस अखूट-अनंत}
अमृतं शृण्वतः तृप्तिः न अस्ति	{भंडारयुक्त/सम्पूर्ण व्याख्यायुक्त} ज्ञानामृत {सांख्ययोग} को सुनते हुए तृप्ति नहीं होती।

•{गीता 10-6 में वर्णित विभूतियों में परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है, उस सदाशिव ज्योति परमपिता समान बने महादेव/आदम की यौगिक ऊर्जा ही उनमें नं. वार व्यापक है। जगत के सारे प्राणी छोटी-बड़ी बैटरीज़ हैं, जो कल्पांत की पु. संगमयुगी शूटिंग में परमात्म-पावरहाउस जगत्पिता द्वारा क्रमशः यथायोग्य पुरुषार्थ-अनुसार योगशक्ति ग्रहण करते हैं।} ('परमात्मा'पावरहाउस देखें, गीता 15-17; 6-7; 13-22, 31)इसी ऊँची योगावस्था की यादगार काशीकैलाशीवासी योगीश्वर महादेव की नग्न लिंगमूर्ति बताई गई है जो सारे संसार की सार्वभौम सत्ता बनी है।

[19-42 भगवान द्वारा अपनी विभूतियों और योगशक्ति का कथन]

श्रीभगवानुवाचः-हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या हि आत्मविभूतयः। प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ न अस्ति अन्तः विस्तरस्य मे।। 10/19

कुरुश्रेष्ठ प्राधान्यतः दिव्या	{हे मेरे मुकर्रर रथी} कुरुश्रेष्ठ! {पहले किसी को न बताई गई ये} खास-2 दिव्य
आत्मविभूतयः ते हन्त कथयिष्यामि	अपनी विभूतियाँ {गहराई से ज्ञानार्जन-अर्थ उत्कंठित} तुझे अनुकंपार्थ कहूँगा;
हि मे विस्तरस्य अन्तः न अस्ति	क्योंकि {वटवृक्ष के बीजरूप} मेरे विस्तार वाले {महादेव/आदम} का अन्त नहीं है।

अहं आत्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः। अहं आदिश्च मध्यं च भूतानां अन्तः एव च।। 10/20

गुडाकेश अहं आत्मा	हे निद्राजीत अर्जुन! मैं आत्मा {जड़ सूर्य मानिंद प्रकाशित चेतन ज्ञान प्रकाश भंडारी शिवज्योति}
सर्वभूताशयस्थितः च भूतानां	सब प्राणियों के आधार {योगीश्वर महादेव की योग-ऊर्जा} द्वारा स्थित हूँ और प्राणियों की
आदिः मध्यं च अन्तः अहमेव	{मूर्तियों का} आदि, मध्य और {हर बार कल्पान्तकालीन महाविनाश में} अन्तकर्ता मैं ही हूँ।

आदित्यानां अहं विष्णुः ज्योतिषां रविः अंशुमान्। मरीचिः मरुतां अस्मि नक्षत्राणां अहं शशी।। 10/21

ज्योतिषां अंशुमान् रविः अहं	ज्योतिमान् पदार्थों में {आत्मज्योति स्वरूप} किरणों वाला {चैतन्य ज्ञान-} सूर्य हूँ।
आदित्यानां विष्णुः मरुतां	{12 सूर्यवंशी} आदित्यों में विष्णु हूँ। {7 विधर्मियों के 7X7=49} मरुतों में
मरीचिः अस्मि नक्षत्राणामहं शशी	मैं {सूर्य की ज्योतिकिरण} मरीचि हूँ। {ज्ञान-योग से भासित} नक्षत्रों में मैं चन्द्रमा हूँ।

वेदानां सामवेदः अस्मि देवानां अस्मि वासवः। इन्द्रियाणां मनश्च अस्मि भूतानां अस्मि चेतना।। 10/22

वेदानां सामवेदः अस्मि देवानां	{चारों} वेदों में सामवेद {रूप सौम्य गीताज्ञान} हूँ। वसुदेवों में {प्रधान वसु=शिव का पुत्र}
वासवः अस्मि इन्द्रियाणां मनः	वासव/•वासुदेव {महेंद्र} हूँ। {11 प्रबल रुद्ररूप} इन्द्रियों में मन {रूपी चंचल कपिध्वज}
अस्मि च भूतानां चेतना अस्मि	{हनुमान} हूँ और {भिन्न-2 समुदाय के} प्राणियों में {योग-ऊर्जारूप} चेतनाशक्ति {मैं ही} हूँ।

{•अजन्मा होने से अखूट ज्ञानधन भंडारी सदा शिवज्योति ही वसु है, जिसका बड़ा बच्चा इन्द्रदेव ही वासव है।}

रुद्राणां शङ्करश्च अस्मि वित्तेशो यक्षरक्षसां। वसूनां पावकश्च अस्मि मेरुः शिखरिणां अहं।। 10/23

अहं रुद्राणां शंकरः च यक्षरक्षसां	मैं {शिवज्योति ही 11} रुद्रगणों में महारुद्र शंकर हूँ और यक्ष-राक्षसों में {उत्तर दिशा का}
वित्तेश अस्मि वसूनां पावकः	{प्रैक्टिकल ज्ञान-} धनकुबेर हूँ, 8 वसुओं में {ज्ञान-योग से प्रायः पवित्रकर्ता} पावक अग्नि
च शिखरिणाम् मेरुः अस्मि	और शिखरों में {प्रतीक} एवरेस्ट• चोटी {रूपी उच्चतम ब्राह्मण -चोटी शंकर महादेव} हूँ।

{•कल्पान्तकालीन प्रलय की जलमई में अविनाशी मूर्तिमंत शंकर की यादगार एवरेस्ट चोटी बचेगी "हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह। एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रबल प्रवाह।"} - (जयशंकर प्रसाद)

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिं। सेनानीनां अहं स्कन्दः सरसां अस्मि सागरः।। 10/24

पार्थ पुरोधसां मुख्यं बृहस्पतिं	पृथ्वीश्वर! पुरोहितों में सबका मुखिया {पतियों का पति सद्गुरु} बृहस्पति देव
मां विद्धि अहं सेनानीनां	मुझे जान। मैं {ज्ञानशस्त्रों से सज्जित} सेनापतियों में {छः सप्तर्षियों की कृत्तिकाओं से पोषित}
स्कन्दः च सरसां सागरः अस्मि	कार्तिकेय और सरोवरों में {धरणीपतिरूप ज्ञान-जल का विशालतम} सागर हूँ।

महर्षीणां भृगुः अहं गिरां अस्मि एकं अक्षरं। यज्ञानां जपयज्ञः अस्मि स्थावराणां हिमालयः।। 10/25

अहं महर्षीणां भृगुः गिरामेकमक्षरं	मैं महर्षियों में भृगु,वाणियों में {अ+उ+म=त्रिदेवों का मेल} एकाक्षर 'ऊँ'
अस्मि यज्ञानां जपयज्ञः	मैं हूँ। {कपोलकल्पित} यज्ञों में {बिंदुरूप आत्म-स्मृति की असली एकाग्रता का मानसिक} जपयज्ञ हूँ
स्थावराणां हिमालयः अस्मि	{और बुलंद ऊंचाई के} स्थिरियम पर्वतों में {युधि+स्थिर रूप} हिमालयराज/हिमवान् हूँ।

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः। गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः।। 10/26

सर्ववृक्षाणां अश्वत्थः देवर्षीणां	सब वृक्षों में {विशालकाय} अश्वत्थ {रूप सृष्टिवृक्ष}, देवर्षियों में {परमप्रसिद्ध भक्त प्रवर},
नारदः गन्धर्वाणां चित्ररथः च	{किन्तु सदा अस्थिर} नार+द, {अर्धदेव गायक} गन्धर्वों में चित्ररथ और {सर्वसमृद्धिप्राप्त}
सिद्धानां कपिलो मुनिः	{मननचिन्तनशील} सिद्धों में {कपिल के ही बसाए कांपिल्यनगर का सांख्यवेत्ता} कपिल मुनि हूँ।

उच्चैःश्रवसं अश्वानां विद्धि मां अमृतोद्भवं। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपं।। 10/27

मां अश्वानां अमृत-	मुझे {मनरूप} अश्वों में {योग से एकाग्र, रुद्रयज्ञ में देहभान से भस्म हुआ व ज्ञान-} अमृत मंथन से

उद्भवमुच्चैःश्रवसं गजेन्द्राणां	पैदा उच्चैः श्रवा, {देहभानी} हाथियों {रूपी वरुण के गजगोर वाले साथी महारथियों} में {इरावान-पुत्र}
ऐरावतं च नराणां नराधिपं विद्धि	ऐरावत और मनुष्यों में राजाधिराज {काशी विश्वनाथ/विश्व महाराजन नारा0} जान।

आयुधानां अहं वज्रं धेनूनां अस्मि कामधुक्। प्रजनश्च अस्मि कन्दर्पः सर्पाणां अस्मि वासुकिः।। 10/28

अहं आयुधानां वज्रं धेनूनां	मैं आयुधों में {अटूट पुरुषार्थी} वज्र हूँ, गायों में {कामनापूर्तिकारी धरणी रूपा}
कामधुक् अस्मि च प्रजनः कन्दर्पः	{श्वेत-काली} कामधेनु गाय हूँ और प्रकृष्ट सन्तान-उत्पादकों में {वृषरूप स्वयं ही नंदी} कामदेव
अस्मि सर्पाणां वासुकिः अस्मि	हूँ {और उरगतिशील} सर्पों में {महाव्यभिचारी विषपायी} वासुकि {नाग} हूँ।

अनन्तश्च अस्मि नागानां वरुणो यादसां अहं। पितॄणां अर्यमा च अस्मि यमः संयमतां अहं।। 10/29

अहं नागानां अनन्तः च	मैं नागों में {शिवबाबा के गले पड़ा अन्तहीन विध्वंशक} अनंतनाग और {विशाल}
यादसां वरुणोऽस्मि अहं पितॄणां	जलजन्तुओं में {पश्चिमेश} वरुणदेव हूँ। मैं {8 धर्मों के बीज अष्टदेव} पितरों में {विवस्वत/
अर्यमा च संयमतां यमोऽस्मि	ज्ञानसूर्य} अर्यमा और सम्पूर्ण यम-नियमकर्ताओं में {धर्म का राजा युधिष्ठिर} यमराज हूँ।

प्रह्लादश्च अस्मि दैत्यानां कालः कलयतां अहं। मृगाणां च मृगेन्द्रः अहं वैनतेयश्च पक्षिणां।। 10/30

अहं दैत्यानां प्रह्लादः च कलयतां	मैं {द्वैतवादी युग के विधर्मी} दैत्यों में प्र+आह्लाद {दाता} और कालगणना कर्ताओं में
कालोऽस्मि च मृगाणां	{कालों का} महाकाल हूँ। तथा {कँटीले संसार रूपी जंगल के जानवरबुद्धि} पशुतुल्यों में
मृगेन्द्रः च पक्षिणां वैनतेयः अहं	सिंह और {देहभान की पूँछ से नृत्यकर्ता} पक्षियों में {सुपर्ण/नागाशन} मयूर हूँ।

पवनः पवतां अस्मि रामः शस्त्रभृतां अहं। झषाणां मकरश्च अस्मि स्रोतसां अस्मि जाह्नवी।। 10/31

पवतां पवनः अस्मि शस्त्र-	पावनकर्ताओं में {पतितपावन सीताराम-जैसा अग्निदेवसखा} पवनदेव हूँ, {ज्ञान-} शस्त्र

भृतां रामोऽहं झषाणां मकरः	धारणकर्ताओं में {कार्तिकेय-रूप} राम {ही} हूँ। मछलियों में {मत्स्यावतार} मगरमच्छ
अस्मि च स्रोतसामस्मि जाह्नवी	हूँ और {विश्वभर की देशी-विदेशी} नदियों में {मैं ही पतित-पावनी} गंगा {कावेरी भी} हूँ।

सर्गाणां आदिः अन्तश्च मध्यं चैव अहं अर्जुन। अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतां अहं।। 10/32

अर्जुन सर्गाणामादिः मध्यश्च	हे अर्जुन! {सारी} सृष्टियों का आदि {आदिदेव}, मध्य {स्लामियों का आदम} और
अन्तः अहं एव विद्यानां अध्यात्म-	अंत {महाकाल} मैं ही हूँ। विद्याओं में आध्यात्मिक {विश्वविद्यालय की सर्वोच्च}
विद्या च प्रवदतां वादः अहं	{राजयोग} विद्या हूँ और {सत्य-असत्य के} वाद-विवाद कर्ताओं का {सत्य} वाद {भी} हूँ।

अक्षराणां अकारः अस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च। अहं एव अक्षयः कालो धाता अहं विश्वतोमुखः।। 10/33

अक्षराणामकारः च सामासिकस्य	अ+क्षरों में {अहं+दा+बादी} अकार और समासों में {महाविरोधी कौरव+पांडवों के}
द्वन्द्वः अस्मि अक्षयः कालः	द्वन्द्व {युद्ध का} समास हूँ। अविनाशी {कालचक्र में सदा हाजिर कालों का काल} महाकाल
अहं विश्वतोमुखः धाता अहमेव	हूँ, {दसों} दिशाओं में {ऊर्ध्वमुखी/पंचमुखी} परंब्रह्मा {महादेव भी} मैं ही {हूँ}।

मृत्युः सर्वहरश्च अहं उद्भवश्च भविष्यतां। कीर्तिः श्रीः वाक् च नारीणां स्मृतिः मेधा धृतिः क्षमा।। 10/34

सर्वहरः मृत्युरहं च भविष्यतां	सारे {संसार} का लोपकर्ता {प्रलयकर्ता} महामृत्यु हूँ और {निकट} भविष्यगत {जड़-जंगम}
उद्भवः च नारीणां	{रूप में पैदा होने वालों का} उद्गम हूँ और {अर्धनारीश्वर/ज्योति+लिंग में} नारियों की
कीर्तिः श्रीः वाक् स्मृतिः	{लक्ष्मी रूपा} कीर्ति, श्री वाक्देवी {बुद्धिरूपा सरस्वती, त्रिनेत्री शंकर की} आत्म-स्मृति
मेधा धृतिश्च क्षमा	{शिव-नेत्र के रूप में} समझशक्ति, {धर्मराज युधिष्ठिर का} धैर्य और {मैं सदाशिवज्योति ही} क्षमा हूँ।

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसां अहं। मासानां मार्गशीर्षः अहं ऋतूनां कुसुमाकरः।। 10/35

तथा साम्नां बृहत्साम छन्दसां	उसी तरह {विवस्वत सूर्योत्पन्न मीठे} सामवेद में बृहत्साम हूँ। छन्दों में {त्रिदेवियों का}

गायत्री अहं मासानां मार्गशीर्षः	गायत्री मंत्र मैं हूँ। महीनों में {सिर-जैसी सर्वोत्तम मार्गदर्शी पूर्णमासी का} मार्गशीर्ष,
ऋतूनां कुसुमाकरः अहं	ऋतुओं में {सदाबहारी हीरोपार्टधारी शिवबाबा रूपी सदासमान सुखदाई} बसन्त ऋतु हूँ।

द्यूतं छलयतां अस्मि तेजः तेजस्विनां अहं। जयः अस्मि व्यवसायः अस्मि सत्त्वं सत्त्ववतां अहं।। 10/36

अहं छलयतां द्यूतं तेजस्विनां तेजः	मैं {बहुरूपिया} छलियों का जुआ हूँ, {विवस्वत जैसे} तेजस्वियों का {ज्ञानसूर्य रूप} तेज
अस्मि जयोऽस्मि व्यवसायः	हूँ, {एकमात्र सदा विजयी ना0 की} जय हूँ, {विश्वनवनिर्माणार्थ} दृढ़निश्चयी {हूँ}
सत्त्ववतां सत्त्वं अहं अस्मि	{16 कला सतयुग के भी आदिकालीन} सात्विक पुरुषों {में आत्मा} की सात्विकता मैं हूँ।

वृष्णीनां वासुदेवः अस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः। मुनीनां अपि अहं व्यासः कवीनां उशना कविः।। 10/37

वृष्णीनां	{ज्ञानवर्षाकर्ता किंतु धारणकर्ता नहीं, ऐसे} वृष्णिवंशी {यूरोपवासी यादवों} में {ज्ञानधन दाता वसुदेव शिव का पुत्र}
वासुदेवोऽस्मि पांडवानां	वासुदेव={यादवों का भी बाप बंबं महादेव,} हूँ। {ब्रह्मलोकीय मार्गदर्शी} पण्डा रूप पाण्डु का पुत्र
धनंजयः मुनीनामहं व्यासः	ज्ञानधनजेता अर्जुन हूँ {द्वापुर के मननशील} मुनियों में मैं {कपिल की आत्मा} व्यास हूँ {और}
कवीनां उशना कविः अपि	कवियों में {शुक्राणुविद्या का आचार्य & हिंसायुक्त कामी असुरों का गुरु} उशना कवि भी {हूँ।}

दण्डो दमयतां अस्मि नीतिः अस्मि जिगीषतां। मौनं चैव अस्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतां अहं।। 10/38

दमयतां दंडः अस्मि जिगीषतां	दमनकर्ताओं का {यम/धर्मराज रूप} दंडाधिकार हूँ, {आदिनारायण जैसे} विजयेच्छुकों की
नीतिरस्मि गुह्यानां मौनमस्मि	राजनीति हूँ, {गुप्त संबंध जोड़ने वाले} गोप-गोपियों का {स्वाभिमान-रक्षक} मौन हूँ
च ज्ञानवतां ज्ञानं अहमेव	& {पृथिव्यादि के तत्वदर्शी कपिल मुनि जैसे} ज्ञानवानों का तत्वज्ञानी मैं {शिवबाबा} ही {हूँ}।

यत् च अपि सर्वभूतानां बीजं तत् अहं अर्जुन। न तत् अस्ति विना यत् स्यात् मया भूतं चराचरं।। 10/39

चार्जुन सर्वभूतानां यदपि	और हे अर्जुन! {84 लाख योनियों में} सब प्राणीमात्र का जो {कुछ} भी {अनादि पितारूप}

बीजं तत् अहं तत् चराचरं भूतं	बीज है, वह {शिवसमान ज्योतिर्लिंग रूप} मैं हूँ। वैसा {एक भी} चराचर प्राणी {संसार में}
नास्ति यन्मया विना स्यात्	नहीं है जो मेरे {मानव-बीज योगीश्वर सनत्कुमार/जगन्नाथ/विश्वनाथ} से रहित हो।

{दुनियाँ की ऐसी कोई चीज़ नहीं जो (बीजरूप) तेरे पर लागू न हो। (मु.ता.11/4/74 पृ.3 अंत)}

{जैसे बिजली की पावर जड़ यंत्रों को चलाती है, वैसे ही योगीश्वर के योग की पावर पुरुषोत्तम संगमयुग की मानसी शूटिंग में प्राप्त नं. वार पुरुषार्थानुसार प्राणियों की जड़ देहरूप यंत्रों को चलाती है।}

न अन्तः अस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप। एष तु उद्देशतः प्रोक्तो विभूतेः विस्तरो मया।। 10/40

परंतप मम दिव्यानां विभूतीनामन्तः नास्ति	हे {कामादिक} शत्रुतापक! मेरी {नं.वार} दिव्य विभूतियों का अन्त नहीं है।
एष विभूतेः विस्तरः तु मया उद्देशतः प्रोक्तः	यह {ऊपर की बताई गई} विभूतियों का विस्तार तो मैंने संक्षेप में कहा है।

यत् यत् विभूतिमत् सत्त्वं श्रीमत् ऊर्जितं एव वा। तत् तत् एव अवगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवं।। 10/41

वा यद्यदेव सत्त्वं विभूतिमत् श्रीमदूर्जितं	अथवा जो-2 {भी} प्राणी ऐश्वर्यवान्, श्रेष्ठबुद्धियुक्त, ऊर्जावान् {विशेषता सम्पन्न} है,
तत्तत्त्वं ममैव तेजोंऽश सम्भवमवगच्छ	उसे तू मेरे ही {पुरुषोत्तम संगमयुगी} तेज/योगऊर्जा के अंश से उत्पन्न हुआ जान।

{संगमयुगी शूटिंग में आत्म-बिंदुरूप बैटरीज़ को योगीश्वर की योग युक्त वृत्ति से पुरुषार्थ-अनुरूप योगऊर्जा मिलती है।}

अथवा बहुना एतेन किं ज्ञातेन तव अर्जुन। विष्टभ्य अहं इदं कृत्स्नं एकांशेन स्थितो जगत्।। 10/42

अथवा अर्जुन तव एतेन बहुना	अथवा हे अर्जुन! तुझे इतने {सागर समान विशाल ज्ञान जल-भंडार से} बहुत {विस्तार में}
ज्ञातेन किं अहं इदं कृत्स्नं जगत्	जानने से क्या {प्रयोजन है}? मैं {सदाशिवज्योति} इस सम्पूर्ण जगत को {अपने योग-ऊर्जा
एकांशेन विष्टभ्य स्थितः	भंडारी महादेव के} 1 अंशमात्र से टिकाकर {पुरु.संगम में भी} स्थित हूँ!